B.A. IIIrd Hons

Supply of Labour

Dr Kumari Manju
H.O.D. Eco
R.N.C.

श्रम की पूर्ति से तात्पर्य श्रम की उस मात्रा से है जिसे मजदूर वर्ग किसी मजदूरी पर विक्रय करने को तैयार होता है। श्रम की पूर्ति का निर्धारण निम्नलिखित तत्वों से होता है—

(क) श्रमिकों की संख्या — श्रम संख्या में कितने व्यक्ति हैं — यह श्रम की पूर्ति का एक आधार है। श्रमिकों की संख्या बहुधा जनसंख्या पर आधारित होती है। जनसंख्या के ~~कितने प्रतिशत~~ प्रतिशत व्यक्ति वास्तव में काम करते हैं — यह जानना आवश्यक है। रेनाल्ड के अनुसार "किसी व्यक्ति को श्रम शक्ति में सम्मिलित करना चाहिए यदि वह कार्य करने में समर्थ है और या तो उसके पास कार्य है अथवा वह काम की सक्रिय तलाश में है।" (An individual is counted as being in the labour force if he is able to work and either has a job or is actively seeking work.") परन्तु इस आधार पर श्रमिकों का अनुमान करना कठिन है। कोई मजदूर अपने को काम के योग्य समझता है परन्तु उद्योगपति उसे अयोग्य मानते हैं। काम की ~~सक्रिय~~ सक्रिय तलाश पर भी मतभेद हो सकता है। जनसंख्या का वह प्रतिशत जो श्रम-शक्ति में सम्मिलित होता है, श्रम-शक्ति सम्मिलित दर कहलाता है। यह दर सरलता से नहीं बदलती। पुनः रेनाल्ड के शब्दों में "श्रम शक्ति में सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों का प्रतिशत अल्पकाल और दीर्घकाल में बहुत कुछ स्थिर रहता है।" (Labour force participation Rates seem to remain quite stable in the short run as well over long periods.")

(ख) काम के घंटे — श्रम की पूर्ति का दूसरा आधार काम के घंटे या समय है। कुल कितने समय ~~तक~~ काम होता है बिना इस बात के जाने श्रम की पूर्ति का अनुमान नहीं हो सकता है। श्रम संगठनों के आंदोलन के साथ काम के घंटे में कमी हुई है और पूर्ति का यह factor कम हुआ है। इसके परिवर्तन होने से भी श्रम की पूर्ति में परिवर्तन हो जायेगा। घंटे की संख्या घटने से पूर्ति कम होती है और घंटे की संख्या बढ़ने से पूर्ति बढ़ती है।

(ग) काम की गति — काम किस गति से होता है यह भी पूर्ति की मात्रा निर्धारित करती है, एक श्रमिक की दुगनी गति से काम करता है वह दूसरे श्रमिक से दुगनी गति से पूर्ति करता है। ~~यह~~ यह गति कई बातों पर निर्भर करती है जैसे; शिक्षा स्वास्थ्य, जलवायु इत्यादि आदतों का असर इस पर पड़ता है।

(घ) काम की दक्षता (Efficiency of skill) — दक्षता से तात्पर्य ~~मात्रा~~ गुणात्मक है। ~~किस~~ कार्य में कितनी गुणवत्ता है, बर्बादी कितनी होती है, दुर्घटनाएँ कितनी हैं इनके आधार पर दक्षता का अनुमान होता है। इस ~~factor~~ factor को बदलने से भी श्रम की पूर्ति बदलेगी।

प्रो० विल्बर्ट मूर (willbert E. Moor) ने इन्हीं चारों factor को एक समीकरण के रूप में प्रस्तुत किया है-

$$P = N \times S \times T \times R$$

जहाँ P = Productivity of labour

S = Skill of labour

T = Time of work.

R = Rate of work.

इनमें से किसी भी factor के अधिकतम होने पर श्रम की पूर्ति अधिकतम होगी आधुनिक समय में कुछ factor बढ़े हैं जैसे- मजदूरों की संख्या में वृद्धि हुई है कार्य की दक्षता एवं तीव्रता में भी वृद्धि हुई है परन्तु कार्य के घंटों में कमी हुई है।

श्रम में पूर्ति का नियम : सामान्यतः मूल्य घटने से पूर्ति कम होती है और मूल्य बढ़ने से पूर्ति बढ़ती है यह वस्तुओं के साथ होता है परन्तु श्रम के साथ पूर्ति का नियम इस प्रकार नहीं लगता। श्रम में पूर्ति के नियम को हम निम्न रेखा चित्र के माध्यम से समझ सकते हैं-

पूरे देश में श्रम की पूर्ति तथा मजदूरी का सम्बन्ध- यह वक्र बताता है कि मजदूरी बढ़ने से पूरे देश में श्रम की पूर्ति घटती है और मजदूरी घटने से पूरे देश में श्रम की पूर्ति का वक्र wage ऋणात्मक होता है जो कि वस्तु के साथ ऐसा नहीं होता है।

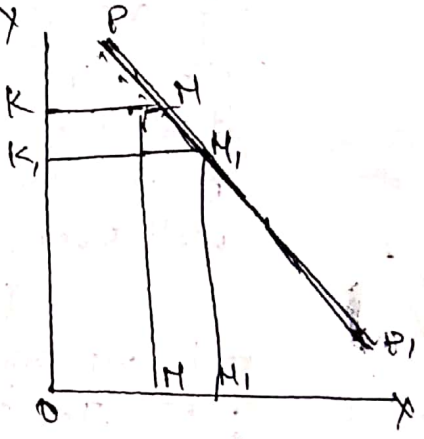

Supply of labour.

पूरे समाज में श्रम की पूर्ति के वक्र के ऋणात्मक होने के कारण — वस्तु की पूर्ति का वक्र सामान्यतः positive होता है अर्थात् जब पूर्ति के नियम के अनुसार होता है, अर्थात् मूल्य घटने से वस्तु की पूर्ति घटती है और मूल्य बढ़ने से वस्तु की पूर्ति बढ़ती है परन्तु पूरे समाज में श्रम की पूर्ति के साथ ऐसा नहीं होता है अर्थात् पूर्ति के नियम का उल्टा होता है, अतः पूर्ति के वक्र को ऋणात्मक वक्र कहा जाता है। इस प्रकार के वक्र

श्रमिकों के कार्य करने का मुख्य उद्देश्य अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करना होता है, मजदूरी ही इस उद्देश्य के पूर्ति का साधन मात्र हो यदि मजदूरी कम हो जाती है तो प्रत्येक मजदूरों को जीवन निर्वाह के लिए अधिक मात्रा में श्रम की पूर्ति करना आवश्यक हो जायेगा क्योंकि इसके विपरीत जीना मुश्किल हो जायगा। फलतः पूर्ति के चार factor अर्थात् संख्या, समय

गति और कुशलता की वृद्धि करने की कोशिश की जाती है। यदि मजदूरी दर बढ़ जाती तो ऐसी कारकों (factor) पर इस प्रकार प्रभाव पड़ेगा —

(a) परिवार — परिवार के अधिक सदस्य को कार्य करना पड़ेगा। जिससे परिवार में बड़ों के साथ-साथ बच्चों स्त्रियों एवं वृद्धों को भी कार्य करना पड़ेगा। पूर्ति का प्रमुख factor मजदूरी की संख्या मजदूरी की विरोधी दिशा में चलती है। अर्थात मजदूरी बढ़ने से श्रमिकों की संख्या घटती है और मजदूरी घटने से श्रमिकों की संख्या बढ़ती है। यह पूर्ति के नियम को ऋणात्मक बनाती है।

(b) समय — यदि मजदूरी दर बढ़ जाने तो श्रमिक के अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी। लेकिन उद्योगों में कार्य के अनुसार मजदूरी दी जाती है — उसमें यह प्रत्यक्ष रूप से देखा जाता है। समय की मात्रा का यह परिवर्तन एक अन्य प्रकार भी होता है अर्थात कम मजदूरी पाने वाले व्यक्तियों को पूरे जीवन भर अधिक कार्य करना पड़ता है। उनका कार्यकाल काफी लम्बा होता है। जबकि ऊँचे व्यक्तियों के यह बातें नहीं पायी जाती हैं।

(c) कार्य की गति — पूर्ति का तीसरा factor कार्य की गति है। मजदूरी बढ़ने से कार्य की गति बढ़ानी पड़ती है। जहाँ कार्य के अनुसार मजदूरी दी जाती है वहाँ कार्य की गति को बढ़ाना अत्यंत आवश्यक होता है। रिक्शा-चालक इसका एक ~~अच्छा~~ ज्वलंत उदाहरण है। वह व्यर्थ का रिक्शा नहीं चलाता वह तेजी से चलाता है क्योंकि परिवार के भरण-पोषण के लिए उसे अधिक तेजी से काम करना पड़ता है।

(d) काम की दक्षता — श्रम पूर्ति का यह चौथा factor है। मजदूरी का प्रभाव श्रम की दक्षता पर भी पड़ता है परन्तु मजदूरी घटने से दक्षता बढ़ेगी नहीं बल्कि घटेगी, अतः पूर्ति का यह पक्ष ऋणात्मक नहीं होगा, धनात्मक ही रहेगा।

रिचर्ड लेस्टर (Richard lester) ने श्रम की पूर्ति के विषय में लिखा है, "अल्पकालिक श्रम की पूर्ति का वक्र इस कारण ऋणात्मक होता है कि जैसे-जैसे परिवार की वास्तविक आय बढ़ती जाती है, मजदूर सप्ताह में कम काम करने की मांग करते हैं, अधिक आराम चाहते हैं। अधिकांश नौकरी के लिए अधिक मजदूरी करने के लिए उत्सुक नहीं होती और औसत कर्मचारी का कार्यकाल दोनों छोरों पर घट जाता है क्योंकि वह शिक्षा पर अधिक समय लगाता है और जल्दी अवकाश प्राप्त कर लेता है।"

* श्रम पूर्ति के पूर्ति ऋणात्मक होने की एक दीर्घकालीन दृष्टि से व्याख्या

* मॉरिस डॉब (Maurice ~~Dob~~ Dobb) ने लिखा है कि "यह बिना एक जोखिम के अर्थ ही कार्य कर सकती है। उदाहरणार्थ यदि कार्य का समय और तीव्रता एक निश्चित बिन्दु से आगे बढ़ जाये तो मजदूरी के स्वास्थ्य और उसके कार्यकाल पर बुरा असर पड़ेगा और उसके पश्चात वह श्रम की पूर्ति घट जायेगी।"

मॉरिस डॉब के संशोधित श्रम की पूर्ति

को निम्न वक्र से स्पष्ट करते हैं।

प्रारंभ में पूरे समाज में मजदूरी कम होने से श्रम की पूर्ति बढ़ती है परन्तु K बिन्दु के पश्चात श्रम की पूर्ति घटने लगती है।

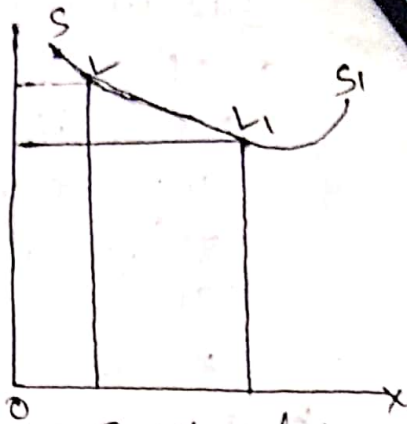

श्रम की पूर्ति के वक्र ऋणात्मक होने का कारण और भी है, वह है श्रम की गतिशीलता का न होना। लोयर के शब्दों में "यदि श्रम की गतिशीलता शून्य हो जाये तो प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक व्यवसाय के श्रम की पूर्ति का वक्र ऋणात्मक हो जायेगा क्योंकि मजदूरी घटने से श्रमिकों को अधिक काम करना पड़ेगा और परिवार के अधिक लोग काम करने के लिए बाध्य हो जायेंगे।"

निष्कर्ष — के उपरोक्त अध्ययन के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि श्रम की पूर्ति एक जटिल चीज है। अन्य वस्तुओं की पूर्ति के आधार पर श्रम की पूर्ति के विषय में अनुमान नहीं किया जा सकता है। श्रम के पूर्ति के विषय में निम्नलिखित बातें स्मरणीय हैं—

(1) एक स्थान पर यदि श्रम की गतिशीलता सामान्य हो, यानि मजदूरों को आने-जाने में कोई कठिनाई न हो तो श्रम की पूर्ति का वक्र धनात्मक होता है यानि मजदूरी बढ़ने से पूर्ति बढ़ती है और मजदूरी घटने से पूर्ति घटती है।

(2) एक स्थान पर यदि श्रम को आने-जाने में कठिनाई हो तो श्रम की पूर्ति का वक्र कभी धनात्मक और कभी ऋणात्मक होता है। यदि श्रम की गतिशीलता शून्य हो जाय तो वक्र ऋणात्मक होगा।

(3) अल्पकाल में पूरे देश में मजदूरी बढ़ने से श्रम की पूर्ति घटती है क्योंकि श्रम के तीन Factors समय, संख्या और कार्य की गति कम हो जाती है और मजदूरी घटने से यह तीनों factors बढ़ते हैं और श्रम की पूर्ति बढ़ जाती है यानि पूरे समाज में श्रम की पूर्ति का वक्र ऋणात्मक होता है।

(4) परन्तु ऐसा दीर्घकाल में नहीं होता। एक सीमा के अन्दर यदि मजदूरी बढ़ा दी जाये तो श्रम की पूर्ति बढ़ने के स्थान पर घटेगी।

(5) मजदूरी का श्रम की दीर्घकालिक पूर्ति से कोई भी निश्चित सम्बन्ध नहीं है। मजदूरी बढ़ने से जनसंख्या में प्रत्यक्ष वृद्धि तो नहीं होती परन्तु मृत्यु संख्या में कमी होने के कारण अधिकतर बच्चे बड़े होकर श्रमिक होकर श्रम की पूर्ति में वृद्धि करते हैं।

प्रश्न: श्रम की पूर्ति क्या है? और किन बातों पर निर्भर करती है, तथा श्रम की पूर्ति का मजदूरी से सम्बन्ध बताइये।

अथवा

"अल्पकाल में श्रम की पूर्ति का वक्र पूरे समाज के ऋणात्मक होता है।" इस कथन की पुष्टि करें।

अथवा

सामान्य वस्तु की पूर्ति और श्रम की पूर्ति में क्या अन्तर है? समझाइये।

Scanned with CamScanner